Padma Bhushan

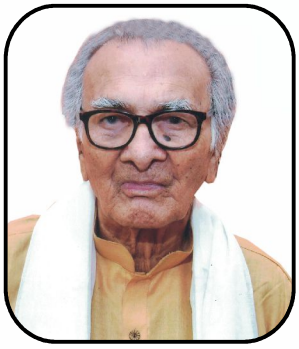

SHRI JATIN GOSWAMI

Shri Jatin Goswami, founder and Chief Director of Sattriya Akademi, a pioneer institute of Sattriya Dance in Guwahati is a veteran Sattriya dance exponent who is widely recognized for his role in growth and development of Sattriya dance. He has made the dance form popular inside and outside Assam.

2. Born on 2nd August, 1933, Shri Goswami started receiving basic education of Sattriya culture under the guidance of his father who was also one of the great Sattriya artistes of his times. He learned Sattriya dance under the guidance of Sangeet Natak Akademi Award winners, Late Maniram Dutta Muktiar and Late Roseswar Saikia Bar Bayan hailed from Sri Sri Kamalabari Sattra. He became well trained up in the multi coloured Assamese folk songs, dances and Ankia Nat (Bhaona) under the guidance of Kalaguru Bishnu Prasad Rabha. He first presented Ankia Nat in modern stage and he is the first and only person to form mobile cultural group for performance of Sattriya dance and Ankia Nat Bhaonas. He also imparted training of Sattriya dance to various mobile theater groups of Assam.

3. Shri Goswami founded Pragjyoti Kala Parishad, a Cultural organization under the guidance of Kalaguru Bishnu Prasad Rabha. With this organization, he visited every Sattra (monastery) and Namghar of Assam and gathered a number of practical knowledge about Sattriya dances and dramas. He visited different parts of the country, performing Sattriya dance. He became most respected seniormost Sattriya dance Guru. He is the pioneer in experimentation and composition of Sattriya dance.

4. Shri Goswami articulated and designed several compositions of Sattriya dance, for which the danceform has got immense popularity. He has led key initiatives for promoting the danceform. He served as a member of the General Council of Sangeet Natak Akademi, New Delhi. He was also a member of the Expert Committee of I.C.C.R, North East Zonal Cultural Centre, Etc.

5. Shri Goswami is the recipient of numerous awards and honours. The Government of India conferred on him Padma Shri in 2008. He received Sangeet Natak Akademi award in 2004 for his outstanding contributions to Sattriya dance. The Government of Madhya Pradesh conferred on him Kalidas Samman in 2017. He has been conferred Akademi Ratna (Fellow) by Sangeet Natak Akademi, New Delhi in 2019. In 2002, he was honoured with Bharatiyam Samman by E.Z.C.C. Department of Tourism and Culture, Government of India. He was awarded with Best Dance Director award by Government of Assam for 1997-98.

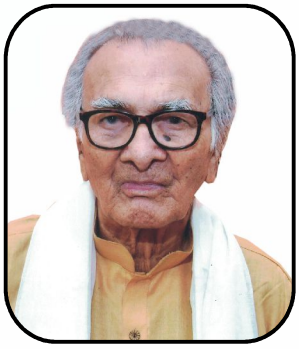

श्री जतिन गोस्वामी

गुवाहाटी में सत्रिया नृत्य की अग्रणी संस्था सत्रिया अकादमी के संस्थापक और मुख्य निदेशक श्री जतिन गोस्वामी एक वरिष्ठ सत्रिया नर्तक हैं, जिन्हें सत्रिया नृत्य के विकास में उनकी भूमिका के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है । उन्होंने असम के अंदर और बाहर इस नृत्य शैली को लोकप्रिय बनाया है।

2. 2 अगस्त, 1933 को जन्मे, श्री गोस्वामी ने अपने पिता के मार्गदर्शन में सत्रिया संस्कृति की बुनियादी शिक्षा हासिल की, जो अपने समय के महान सत्रिया कलाकारों में से एक थे। उन्होंने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार विजेता स्वर्गीय मनीराम दत्ता मुक्तियार और स्वर्गीय रोसेस्वर सैकिया बार बायन के मार्गदर्शन में सत्रिया नृत्य सीखा जो श्री श्री कमलाबारी से संबंध रखते हैं। उन्होंने कलागुरु बिष्णु प्रसाद राभा के मार्गदर्शन में बहुरंगी असमिया लोकगीतों, नृत्यों और अंकिया नट (भौना) का प्रशिक्षण लिया। उन्होंने पहली बार आधुनिक मंच पर अंकिया नट प्रस्तुत किया और वह सत्रिया नृत्य तथा अंकिया नट भौना के प्रदर्शन के लिए मोबाइल सांस्कृतिक समूह बनाने वाले पहले और एकमात्र व्यक्ति हैं। उन्होंने असम के विभिन्न मोबाइल थिएटर समूहों को सत्रिया नृत्य का प्रशिक्षण भी दिया।

3. श्री गोस्वामी ने कलागुरु बिष्णु प्रसाद राभा के मार्गदर्शन में सांस्कृतिक संगठन, प्राग्ज्योति कला परिषद की स्थापना की। इस संगठन के साथ, उन्होंने असम के हर सत्र (मठ) और नामघर का दौरा किया और सत्रिया नृत्य और नाटकों के बारे में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने देश के अलग–अलग भागों में सत्रिया नृत्य का प्रदर्शन किया। वह सबसे सम्मानित वरिष्ठतम सत्रिया नृत्य गुरु बन गए। वह सत्रिया नृत्य के प्रयोग और रचना में अग्रणी हैं।

4. श्री गोस्वामी ने सत्रिया नृत्य की कई रचनाएं प्रस्तुत कीं और उन्हें तैयार किया, जिसके कारण इस नृत्य शैली को काफी लोकप्रियता मिली। उन्होंने इस नृत्य शैली को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण पहल की हैं। उन्होंने संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली की सामान्य परिषद के सदस्य के रूप में कार्य किया। वह आईसीसीआर, उत्तर पूर्व क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र की विशेषज्ञ समिति के सदस्य भी थे।

5. श्री गोस्वामी को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। 2008 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया। सत्रिया नृत्य में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए 2004 में उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 2017 में मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें कालिदास पुरस्कार से सम्मानित किया। 2019 में संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली ने उन्हें अकादमी रत्न (फेलो) से सम्मानित किया। 2002 में भारत सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति के ईजेडसीसी मंत्रालय द्वारा उन्हें भारतीयम सम्मान दिया गया। असम सरकार ने उन्हें वर्ष 1997–98 के लिए सर्वश्रेष्ठ नृत्य निर्देशक का पुरस्कार प्रदान किया।